भारत सरकार
मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय
पशुपालन और डेयरी विभाग
राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या- 1177
दिनांक 30 जुलाई, 2025 के लिए प्रश्न

याक संरक्षण योजनाएँ

1177. श्री दोरजी त्शेरिंग लेप्चाः

क्या **मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार ने सिक्किम राज्य में याक के आनुवंशिक सुधार और संरक्षण की दिशा में कोई कदम उठाया है;

(ख) क्या सरकार याक पालने वाले समुदायों को कोई वित्तीय सहायता प्रदान करती है;

(ग) यदि हाँ, तो वित्तीय सहायता प्राप्त करने के लिए निर्धारित मानदंडों सहित तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(घ) जलवायु परिवर्तन और अन्य सामाजिक-आर्थिक कारकों के प्रभावों पर काबू पाने के लिए सरकारी नीति द्वारा उठाए गए कदमों का ब्यौरा क्या है और क्या याक पालन में रुचि कम हो रही है?

उत्तर
मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी राज्य मंत्री
(प्रो.एस.पी. सिंह बघेल)

(क) याक के आनुवंशिक सुधार और संरक्षण की दिशा में राज्य द्वारा किए गए प्रयासों को अनुपूरित और संपूरित करने के लिए, पशुपालन और डेयरी विभाग राष्ट्रीय गोकुल मिशन योजना के तहत याक के विकास और संरक्षण को कवर कर रहा है। इस प्रयोजन के लिए योजना के तहत सिक्किम राज्य को निधियां जारी की गई हैं।

(ख) और (ग) पिछले 5 वर्षों के दौरान, सिक्किम राज्य को देशी नस्लों तथा याक के विकास, संरक्षण और याक पालने वाले समुदायों को सहायता प्रदान करने के लिए 600 लाख रुपये की वित्तीय सहायता जारी की गई है। इस योजना के अंतर्गत राज्यों को योजना के दिशानिर्देशों के अनुसार निधियां जारी की जा रही हैं।

(घ) जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों को कम करने के लिए राज्य द्वारा किए जा रहे प्रयासों को अनुपूरित और संपूरित करने के लिए, पशुपालन और डेयरी विभाग, देशी नस्लों के विकास एवं संरक्षण तथा दुग्ध उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि हेतु राष्ट्रीय गोकुल मिशन को कार्यान्वित कर रहा है। देशी नस्लें गरमी को सहने की अपनी शक्ति, विषम जलवायु परिस्थितियों को झेलने की क्षमता के लिए जानी जाती हैं और ये जलवायु परिवर्तन से सबसे कम प्रभावित होती हैं। याक और मिथुन सहित देशी बोवाइन नस्लों के विकास और संरक्षण हेतु इस योजना के अंतर्गत निम्नलिखित कदम उठाए जा रहे हैं: (i) इस योजना के अंतर्गत, किसानों और पशुपालक समुदायों के बीच याक सहित देशी बोवाइन नस्लों के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए प्रजनन शिविर, दूध उत्पादन प्रतियोगिता, बछड़ा-बछिया रैलियां, किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम, सेमिनार और कार्यशाला, सम्मेलन आदि के आयोजन के लिए निधियां जारी की गई हैं; (ii) देशी नस्लों के सीमन सहित उच्च आनुवंशिक गुणता वाले सांडों के सीमन का उपयोग करके 50% से कम कवरेज वाले जिलों में कृत्रिम गर्भाधान कवरेज बढ़ाने के लिए राष्ट्रव्यापी कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम का कार्यान्वयन; (ii) देशी नस्लों सहित बोवाइन पशुओं के तीव्र आनुवंशिक उन्नयन के लिए बोवाइन इन-विट्रो फर्टिलाइजेशन तकनीक (IVF) का उपयोग करते हुए त्वरित नस्ल सुधार कार्यक्रम।

राज्य सरकार जागरूकता कार्यक्रम, सेमीनार और कार्यशालाएं आयोजित कर रही है, जिनका उद्देश्य याक संरक्षण पर विशेष रूप से ध्यान देते हुए जलवायु परिवर्तन के सामाजिक-आर्थिक कारकों और प्रभावों को दूर करना है। ये पहलें वर्ल्ड वाइड फंड फॉर नेचर (WWF), द अशोका ट्रस्ट फॉर रिसर्च इन इकोलॉजी एंड द एन्वायर्नमेंट (ATREE), जीबी पंत संस्थान, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (ICAR)- राष्ट्रीय याक अनुसंधान केंद्र (NRC याक), दिरांग और अंतर्राष्ट्रीय एकीकृत पर्वतीय विकास केंद्र (ICIMOD) के साथ मिलकर चलाई जा रही हैं।

आईसीएआर के अनुसार, एनआरसी याक पारंपरिक ट्रांसह्यूमन्स (transhumance) प्रथाओं से हटकर याक पालन को आर्थिक रूप से अधिक व्यवहार्य बनाने के लिए एक अर्ध-गहन याक-पालन मॉडल पर काम कर रहा है। यह संस्थान याक पालन से जुड़े किसानों की आय बढ़ाने के लिए कौशल विकास, क्षमता निर्माण और याक-आधारित इको-टूरिज्म को बढ़ावा देने संबंधी कार्य भी कर रहा है।

याक पालन में किसानों की घटती रुचि के बारे में विभाग के पास कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है।

*****